بسم الله الرحمن الرحيم

"खुदा की राह में शहीद होने वालों को
मुर्दा मत समझो । वो तो अमर हैं ।"
(कुरआन-मजीद)

(सै. कुतबुद्दीन शहीद की)

अमर कहानी

बुक नं. ५

लेखक : शेख एहमदअली राज
अनुवादक : सालेह मोहम्मद नायब

(हिजरी) ता. 15-6-1401 (ई.स.) ता. 19-4-1981

तनज़ीमे-इशाअते-इस्लामी तालीम
66, डा. ज़ाकिर हुसैन मार्ग, उदयपुर 313001

A to Z Massage Conveyor 2432637

दूसरा एडिशन

(हिजरी) ता. 27 / 6 / 1426

(ई. स.) ता..2 / 8 / 2005

हज़रत अली असगर

नूरे नज़र शाहे शहिदा अली असगर
आगोशे पिदर में हुए बेजान अली अ गर।।

तुम जबके हुऐ खून में गलतान अली असगर।
रोते थे तुमें सय्यदे जीशान अली अ गर।।

रंजो गमो आफत से मुझे जल्द रिहा कर।
ऐ नन्हे मुजाहिद मुझे दिलबंद अता कर।।

दिल ने कहा गर होवे तुझे ख्वाहिशे औलाद।
कर दिलबरे शब्बीर से रो रो के ये फरयाद।।

औलाद के खतिर तुझे करता है जह याद।
ऐ असगरे मेहरू मेरा दिल किजिए शाद ।।

रंजो गमो आफत से मुझे जल्द रिहा कर।
ऐ नन्हे मुजाहिद मुझे दिलबंद अता कर।।

ईजा मुझे देता है ये क्योंकर फलक पीर।
डाली है मुसीबत की मेरे पाँव में जंजीर।।

मशहकूर जमाने में हो तुम साहिबे तकदीर।
दिखला दो मुझे बानु के तुम शीर का तासिर।।

रंजो गमो आफत से मुझे जल्द रिहा कर।
ऐ नन्हे मुजाहिद मुझे दिलबंद अता कर।।

जिस घर में न होवे अगर ये नेमते ज़मा।
घर कब्र के मानिनद वो रहता है अंधेरा।।

हैदर की तरह तुम भी सखावत में हो यकता।
कर दीजिए अब पूरी मेरे दिल की तमन्ना।।

रंजो गमो आफत से मुझे जल्द रिहा कर।
ऐ नन्हे मुजाहिद मुझे दिलबंद अता कर।।

इमदाद करो तुमको पयैम्बर की कसम है।
और शेरे खुदा हैदरे सफदर की कसम है।।

फरियाद सुनो फातिमा अतहर की कसम है।
दिलबंद हज़रते अली शब्बर की कसम है।।

रंजो गमो आफत से मुझे जल्द रिहा कर।
ऐ नन्हे मुजाहिद मुझे दिलबंद अता कर।।

देता नहीं मैं रूह को कसमो से अजिअत।
पर क्या करूँ मजबूर हूँ ऐ शमऐ हिदायत।।

मै मुजतरो हैरान हूँ नहीं कल्ब को ताकत।
दो दाद मेरी क्यों की हो तुम साहिबे रहमत।।

रंजो गमो आफत से मुझे जल्द रिहा कर।
ऐ नन्हे मुजाहिद मुझे दिलबंद अता कर।।

दी थी जो मुझे दौलते औलाद खुदा ने।
वो छीन ली आकर मेरे हाथों से कज़ा ने।।

शब्बीर के सदके में शाहे उकदा कुशां ने।
फिर दी मुझे एक बेटी शहनशाहे हुदा ने।।

रंजो गमो आफत से मुझे जल्द रिहा कर।
ऐ नन्हे मुजाहिद मुझे दिलबंद अता कर।।

दो दाद मेरी ईज़्ज़दे गुफ्फार का सदका।
दो दाद मेरी अहमदे मुख्तार का सदका।।

दो दाद मेरी हैदरे करार का सदका।
दो दाद मेरी इतरते अतहार का सदका।।

रंजो गमो आफत से मुझे जल्द रिहा कर।
ऐ नन्हे मुजाहिद मुझे दिलबंद अता कर।।

इम्दाद करो सिनते पयम्बर का तस्ददुक।
इम्दाद करो आबिदे मुजतर का तस्ददुक।।

इम्दाद करो खासाऐ दावर का तस्ददुक।
इम्दाद करो कासिमो अकबर का तस्ददुक।।

रंजो गमो आफत से मुझे जल्द रिहा कर।
ऐ नन्हे मुजाहिद मुझे दिलबंद अता कर।।

तसनीन पर अब जल्द से रहमत की नज़र हो।
आबाद मेरा दौलते औलाद से घर हो।।

कुछ हो के न हो पास मेरे लख्ते जिगर हो।
सदके में मुझे तेरे अता नूरे नज़र हो।।

रंजो गमो आफत से मुझे जल्द रिहा कर।
ऐ नन्हे मुजाहिद मुझे दिलबंद अता कर।

इन्तिसाब

यह किताब "अमर कहानी" को हम जनाब शैखुल फाज़िल हाज मरहूम मियासाब याक़ूब अली सा. की तरफ मनसूब करते है। अल्लाह सुब्हानहु ने आपको अपनी रहमत व मग़फेरत से और आले मोहम्मद (अ. स.) की शफाअत से नवाजें।

आप जुमादिल उखरा की पहली रात (मुताबिक 4-4-81 शनिवार) इस दारे-फानी से मामूली अलालत के बाद इन्तेकाल फरमा गए।

"इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलयहे राजेउन"

आपकी पैदाईश ता. 3 जुमादिल-उला 1330 हि. उदयपुर में हुई, आपके वालिद माजिद अल-हाज्ज महूम मु. कुरबान हुसैन मु. एहमदजी बिन मु. हिब्बुल्लाजी बिन इब्राहीमजी बिन लुकमानजी राजनगर वाले की तरह ही आपने भी तालिम, अमालत, तिजारत और समाजी कौमी व मिल्ली खिदमत में अपनी पूरी जिन्दगी गुजारदी। अपने भाई शैखुल फाज़िल अल अलीमुल जयिद एहमदअली साहब की मदद करते रहे।

दाऊदी बोहरा यूथ की तहरीक के लिए आप एक संगे बुनियाद व पुख्ता इरादे वाले पूरजोश सिपाही थे। मर्दे मुजाहिद की तरह ज़िन्दा रहे और मज़लूमों की मदद करते हुए ही वफात हुए। अल्लाह सुब्हानहु आपको हर मुसीबत ज़दा मज़लूमों की तरफ से जज़ाए-खैर अता करें।

आपकी दिलेरी की यही मिसाल काफी है कि जब तागूती हाकिमों ने उदयपुर में मसाजिद और मजालिसे-वाअज़ पर पाबन्दी करदी तब ऐसे नाजुक वक्त में आपने ही बड़ी हिम्मत से मजलिसे-वाअज़ की, और ग़मे हुसैन (अ.स.) की पाकीज़ा रस्म को खत्म नहीं होने दिया इसी वजह से नजमी तागुतों के निशाने बने रहे।

इसी तरह हज की रूहानी इजारा दारी को भी आपने ही सलकारा 1399 हि. में एक बड़े काफिले के साथ हज के फरीजे को खैरो-खुबी से अदा करके हज के सिलसीले को भी जारी किया। अपनी दिलेरी के बाईस उमुमन तमाम लोग और खुसुसन मु. व मशाईख को यह बता दिया के हर तागूती ताकत से निडर होकर मुकाबला करो।

हक्को सदाकत के लिए चाहे जितनी मुसीबत पहुँचे खुश होकर बर्दास्त करो और हर किस्म की मस्लेहत को छोड़कर हकीकत को जाहिर करने से मत डरो ताकि तुम्हारी जिन्दगी "अमर कहानी" बन जाए।

आप खुश अख्लाक नेक किरदार अच्छे वाइज़ी और खुशगुलु थे। यह किताब "अमर कहानी" को हमने शेख साहब की रुह के सवाब के लिए इसलिए मनसूब किया है कि आप मौलाना कुतबुद्दीन शहिद के बड़े शेहदायी थे। आप उर्स मुबारक पर जहां कहीं होते सैयदी सादिक अली सा. के हादेसा को इस अन्दाज़ से पढ़ते गोया शहादत का नक्शा आंखों के सामने खिच जाता।

(ब-फ़ावाए अल-मरओ-योह-शरो-माअ-मन-अहब्बा) हर शख्स का हश्र उसके महबूब के साथ होता है।

अल्लाह सुब्हानहु आपको मोहम्मद व आले मोहम्मद व दुआते हक और मौलाना कुतबुद्दीन शहीद (आ. कु.) के साथ हश्र करे।

आमीन! या रब्बुल आ-ल-मीन

<ΛΨ

करुं पहले तौहीद-ए-यज़दां रक़म,
झुका जिसके सजदे को अव्वल कलम।

हम्द-व-सना अल्लाह के लिए और सलाम
उसके नेक बन्दों पर।

कयामत के दिन हिसाब होगा। नेकियां करने वालों को जन्नत और बुराइयां करने वालों को जहन्नुम मिलेगा। यदि किसीने एक चिड़िया को भी बिला सबब ज़बेह किया तो उसका भी किसास लिया जाएगा। कुफ्र, शिर्क, निफाक और जुल्म करने वालों से जवाब तलब किया जाएगा। जब यह लोग इनकार करेंगे तो उनके ज़माने के लोगों से गवाही मांगी जाएगी। अगर उनकी गवाही भी नहीं मानेंगे तो उनके मुंह पर मोहर लगादी जाएगी, और उनके हाथ पाऊं से गवाही मांगी जाएगी। जब हाथ पाऊं गवाही देंगे तब कहा जाएगा "क्या तुम्हारे बीच हादी-रहबर नहीं आए थे? तब ज़ालिम लोग इनकार करेंगे, कहेंगे कि हां कोई रहबर नहीं आया था। तब हर ज़माने के नबियों और वलीयों (संतों) को हाज़िर करके पूछा जाएगा वे सब कहेंगे इन ज़ालिमों को खूब समझाया था मगर ये नहीं समझे। उल्टा हमें तरह-तरह से सताया"। ज़ालिम लोग वहां भी अपने हादियों को झुटलाएंगे।

आखिर में कहना पड़ेगा कि हमने जो कुछ किया अपनी मर्जी से नहीं मगर दुसरों के बहकाने से किया। तब उन्हें उन लोगों के साथ कर दिया जाएगा, जिन्होंने उनको बहकाया था। वो प्यास के मारे तड़प रहे होंगे और सब के सब जहन्नुम में ढकेल दिए जायेंगे। मगर कोई किसी की मदद नहीं करेगा।

अल्लाह तआला हमें ऐसे ज़ालिमों से बचाए।

आमीन, या रब्बुल-आलमीन।[1]

(1) मौसम-ए-बहार शेख मोहम्मद अली जीवाजी पृ0 279

अहमदाबाद

शहर अहमदाबाद आजकल गुजरात की राजधानी है। पहले भी कई बार यह शहर राजधानी रह चुका है। आजकल यह शहर सूती कपड़ों के कारखानों के कारण तो मशहूर है ही। झूलते मीनारों कदीम मस्जिदों और शहीदों के मज़ारों के लिए भी यह मशहूर है।

इसी शहर में कई हुकूमतें बनी और बिगड़ी हैं। कभी यह आज़ाद गुजरात की राजधानी रहा तो कभी हिन्दुस्तान की केन्द्रीय हुकूमत के मातेहत रहा। बरसों तक यह शहर राजनैतिक उथल पुथल का शिकार रहा।

अहमदाबाद में सरसपुर के कब्रिस्तान में आपको काफी बड़ी तादाद में शहीदों की कब्रें मिलेंगी। शहर में कई दूसरे स्थानों पर भी आपको शहीदों के मज़ार दिखाई देंगे। इसीलिए अहमदाबाद को "हिन्दुस्तानी करबला" के नाम से याद किया जाता है।

कुतबी मजार :— सरसपुर कब्रिसतान में सैयदना कुतबुद्दीन शहीद का मकबरा देखकर आपके दिल में सैयदना कुतबुद्दीन की सदाकत, हक्कानियत और कुर्बानी की दास्तान याद आए बगैर नहीं रहेगी। हक्को-सदाकत के लिये अपनी जान तक कुर्बान करदेने वाले इस मर्दे-मूमिन की जिन्दगी कयामत तक लोगों को प्रेरणा (Inspiaration) देती रहेगी। सैयदना साहब के 345 वें उर्स-मुबारक के मौके पर हम नाज़िरीन (पाठक गण) हज़रात की खिदमत में यह मुख़तसर पुस्तिका पेश कर रहे हैं।

ताकि अरबी और उर्दु ज़बानें नहीं जानने वाले लोग सैयदना कुतबुद्दीन (रह. अ.) के व्यक्तित्व और कृतित्व (Personality and Character) से अवगत (वाकिफ) होकर उनकी सीरत पर चलने की कोशिश करें।

सै. कुतबुद्दीन शहीद की जीवन झांकी

आप हमारे 32 वें दाई थे। कुतुबखान नाम और "मौलाना कुतबुद्दीन शहीद के नाम से आम बोहरों में मशहूर हैं।

आपके वालिद माजिद का नाम सै. दाऊद बिन कुतुबशाह था। मां नाम बूलन बाई था। आपका जन्म मंगलवार 23 जिल्काद सन 985 हि० में हुवा था। आप और आपके वालिद-माजिद दोनों हाफिजुल-कुरआन थे। आपके वालिद-माजिद सैयदना दाऊद बिन कुतुबशाह वही दाई हैं। जिनके नाम पर हम "दाऊदी बोहरे" के नाम से प्रसिद्ध हो गये। आप सन 1054 हि० में दावत की मसनद पर रोनक अफ्रोज हुए।

बचपन की एक घटना

एक बार बचपन में आप सख्त बीमार पड़ गये। जब घर के सब लोग आपकी जिन्दगी से मायूस हो गये तो सै. दाऊद बिन कुतुब शाह ने फर्माया कि मेरा बेटा कुतुबखान बिस्तर पर नहीं मरेगा बल्कि राहे-खुदा में शहादत हासिल करेगा। मेरे बाद यह दाई बनेगा। उन्हों ने फरमाया कि रसूलुल्लाह (स.अ.) ने भविष्वाणी की है कि 1000 साल पूरे होने के वक्त मेरा एक दाई हिन्दुस्तान में शहीद होगा, उनसे मुराद मेरे बेटे कुतुबखान कुतबुद्दीन से ही थी। वास्तव में ऐसा ही हुआ।

कुछ ही दिनों में सै. कुतुबखान ने शिफा पाई । बड़े होकर दाई बने और शहादत भी पाई ।

तख्ते-दावत पर पदासीन होना

31 दाई सै. कासिम जैनुद्दीन के वफात (मृत्यु) होने पर सन् 1054 हि. में आप 32 वें दाई की हैसियत से दावत के तख्त पर पदासीन हुए । एक साल 8 महीने और 18 दिन तक आप इस पद पर रहकर[1] सन 1056 हि. को शहीद हुए । उस वक्त आपकी उम्र 72 बरस की थी ।

शहादत का पसे-मंजर

सैयदना कुतबुद्दीन के जमाने में हिन्दुस्तान में मुगल बादशाह शाहजहां की हुकूमत थी । अहमदाबाद में उसका बेटा औरंगजेब गवर्नर (राज्यपाल) था ।

जब से अहमदाबाद और गुजरात में बोहरा कौम वजूद में आयी तभी से मजहबी पेशवाओं, मुखियाओं और आम बोहरों को नाना प्रकार के जुल्मों व ज्यादतियों का सामना करना पड़ा । कभी अन्दरुनी स्वार्थी तत्वों ने परेशान किया, कभी जाफरी-बोहरों ने तंग किया कभी सुन्नी-मुसलमान मोलवियों और (शासकों) ने सताया ।

सै. कुतबुद्दीन भी विरोधियों और दुश्मनों से न बच सके । बोहरों के मजहबी-अकीदे को लेकर कुछ विरोधी फिर्कों और कट्टर सुन्नी मुसलमानों ने उन्हें चैन से नहीं बैठने दिया ।

(1) इकदुलजवाहिर फी अहवालुल-बवाहिर, लेखक मौलाना सैयद अबूजफर निदवी पृ0 195

अन्दर ही अन्दर आपको शहीद करने की साजिश रची गयी दुर्भाग्य से उस समय दुश्मनों को एक मोलवी का सहारा मिल गया । वह था मौलवी अब्दुल कवी ।

वह अहमदाबाद में मुगल-फोज का सेनापती था ।[1] दुश्मनों ने सै. कुतबुद्दीन के विरुद्ध तरह तरह की अफवाहें उड़ाई और हुक्कामों तक उनकी शिकायत पहुँचाई ।[2] मोलवी अब्दुल कवी वही व्यक्ति है जो आमतौर से "अब्दुल-गवी" के नाम से परिचित है । इसी ने दिल्ली में हजरत सरमद (रह. अ.) को कत्ल किया था ।[3]

साजिश की शुरूआत

सैयदना साहब की शहादत की शुरुआत इस तरह हुई कि कुछ विरोधी लोग अहमदाबाद के एक रईस (सेठ) के यहां जमा हुए । उसका नाम कासिम था । वह मुल्ला शेख भागल (मोहल्ले) में रहता था । यहां उन्होंने सै. कुतबुद्दीन के खिलाफ प्लान तैयार किया । ये लोग सेनापती अब्दुल कवी के पास गये और सैयदना साहब पर "राफजी"[4] होने का इलजाम लगाकर उन्हें कत्ल करने की प्रार्थना की ।

अब्दुल कवी ने यह शिकायत औरंगजेब तक पहुँचाई । औरंगजेब ने सैयदना की गिरफ्तारी का हुक्म दिया ।

1, 2, 3, इकदुल जवाहीर फी अहवालुल-बवाहीर पृ. 190, 191

4. "राफजी" का अर्थ "शरीअते-मोहम्मदी को छोड़नेवाला" सुन्नी मुसलमान शीआ मुसलमानों को ताना देते वक्त यह लफ्ज बोला करते हैं ।

अब्दुल कवी ने शाह बेग कोतवाल को बुलाकर सै. कुतबुद्दीन को गिरफ्तार करके लाने को कहा, शाह बेग शीआ-मुसलमान था उसे यह बात बेहद बूरी लगी । उसने उस वक्त हुक्म की तामील (पूर्ति) नहीं की, दूसरे दिन सुबह फिर हुक्म मिला नाचार सैयदना के मकान पर आया । सैयदना साहब उस वक्त शैखों को दरस (मजहबी-सबक) दे रहे थे । जासूस ने यह खबर पहुँचाई । आपने "लाहोल" पढ़ने के बाद सभी शैखों को रुखसत फर्माया, अल्लाह तआला की ज़ात पर भरोसा करके वहीं बैठे रहे । किसीने सच ही कहा है, "दुनिया वाले मौत से डरते हैं, खुदावाले खुश-खुश उसका स्वागत करते है ।

जब कोतवाल मकान पर पहुँचा तो आप कुरआन पाक की तिलावत कर रहे थे । कोतवाल ने आपको बाद सलाम के कहा कि शहज़ादा ने आपको बुलाया है । यह कहकर आपको गिरफ्तार करके ले चला । इधर आपकी गिरफ्तारी हुई उधर विरोधियों ने जो वहां भारी संख्या में जमा हो गये थे, आपकी किताबों को लूट कर ले गये ।[1] कहते हैं वे लोग किताबों की छः गाड़ियां भरकर अपने साथ ले गये ।

सैयदना साहब को कोतवाल एक गाड़ी में सवार करके ले गया था । रास्ते में आपको पीरखान शुजाउद्दीन अपने घर की देहलीज़ पर खड़े नज़र आये । उन्हें इस घटना की खबर नहीं मिली थी । सैयदना साहब ने उन्हें भी बुला अपने साथ ले लिया । गाड़ी के चारों तरफ चार मुग़ल सिपाही थे और पीछे बड़ी तादाद में विरोधियों की भीड़ थी ।

1. इसी तरह सन 1970 ई० सुरत शहर में जामिआ-सैफिया के चारों उस्तादों की किताबें लूटी गई थी ।

इस घटना को शैख सादिक अली ने एक लंबी दर्दो-गम में डूबी नज्म में बयान किया है ।

गिरफ्तारी की खबर मिलने पर क्या हुआ उनकी ज़बानी सुनिये ।

बेटी अजब बू आपनी वाहली थी, बे-नजीर,
बैठा था तेहना घर मा वो कुतबुल-हुदा मुनीर,
आ बात नै सुनी ने वो मूमिन ना दस्त-गीर,
लाहोल ने पढ़ी ने वो ईमान ना अमीर,
रुखसत करा हदूद सरों ने तें आन मां,
थई ला उवाली बैठा था खालिक ना ध्यान मा ।

शाह बेग नी सवारी जिवारे थई करीब,
त्यारे अजब बू बोला वो सरवर थी ए-हबीब,
अन्दर पधारो आप, अपन कौम छे गरीब,
खालिक वगर कोई नथी दाद-रस मुजीब,
बेहद दुआ करीने वो दिकरी ना हाल पर,
बोला कि सर फिदा छे मोहम्मद नी आल पर ।

सैयदना के गम में मूमिनीन की हालते-ज़ार

इस घटना के दिनों में अहमदाबाद में बोहरा मूमिनीन बड़ी संख्या में आबाद थे । करीब बाईस अलग-अलग मोहल्लों में यह लोग रहते थे । इन लोगों को जब सैयदना कुतबुद्दीन की गिरफ्तारी, किताबों की लूट और शहीद कर देने की साजिश की बात मालूम हुई तो सारे शहर में रंजो-गम के बादल छा गये । लोग खाना पीना भूल गये । घरों में औरतें मातम करने लगीं, बच्चों तक ने खाने को हाथ नहीं लगाया ।

सारा शहर शहर ए-मातम बन गया । आपकी बेटी अजब बू तो हाल-बेहाल, रन्जो-ग़म से निढाल और बेहोश हो गयीं थी । उनकी हालते-ज़ार वैसी ही थी जैसी बीबी सकीना की कर्बला अपने वालिद बाक़ा हुसैन के ग़म में थी ।

सैयदना कोतवाल के घर में

इधर शहर में यह दर्दनाक आलम (वातावरण) था । उधर शाहबेग सैयदना साहब को अपने घर ले जाकर पूरे आदर व सम्मान के साथ बिठाया ।

अब्दुल क़वी कुछ मौलवियों को साथ लेकर वहां आया । ज़ोहर से मग़रिब तक उन मौलवियों ने लूट कर लाई गयी किताबों को छान मारा लेकिन कोई बात ऐसी नहीं मिली जिससे सैयदना साहब पकड़ में आसकें ।[1] सैयदना ने इशा की नमाज़ वहीं अदा की ।

जब शहज़ादा औरंगजेब को आपकी गिरफ्तारी की खबर दी तो उसने हुक्म दिया कि फिलहाल कोतवाल के घर में ही रखो । मूमिनीन बड़ी तादाद में वहां जमा हो गये थे और आहो-ज़ारी कर रहे थे । आपने सब को कर्बला की मिसाल देकर सब्र करने की तलकीन (उपदेश) की और अपने घरों पर लोट जाने को फर्माया । जलालपुर वाले तो रात भर वहीं बैठे रहे । दूसरे लोग वहां से चले गये । दूसरे दिन सुबह फिर तमाम मूमिनीन वहां चले आए ।

(1) इकदुल-जवाहीर फी अहवालुल बवाहिर पृ. 191

सैयदना को कैद करने का हुक्म

कोतवाल शाहबेग वापस शाही दरबार में गया और सैयदना के बारे में हुक्म तलब किया । शाहज़ादे ने कोई जवाब नहीं दिया । उसने फिर पूछा फिर कोई जवाब नहीं दिया । बारबार पूछने पर शाहज़ादे ने कहा कि अब्दुल क़वी के पास जाओ और उसके हुक्म के मुताबिक (अनुसार) अमल करो ।

अब्दुल क़वी ने हुक्म दिया कि उन्हें जेल में लेजाकर बन्द करदो । अतः शाहबेग उन्हें जेल खाना ले गया । यह घटना 29 जुमादिल-अव्वल की है । आप जेलखाने में बीस दिन तक बन्दी रहे । इन दिनों में अब्दुल क़वी और उसके मौलवीयों ने लूटी हुई किताबों को अच्छी तरह टटोला पर उनमें कोई आपत्तिजनक बात नहीं मिली ।

वो-अन्धेरे दिन

इन 20 दिनों में तमाम मूमेनीन पर क्या गुज़री होगी उसे बयान करना हमारे लिए मुमकिन नहीं है । हां उदयपुर के तमाम-मूमेनीन इसका अन्दाज़ा ज़रूर लगा सकते हैं । क्योंकि सन 1975 ई0 में मौजूदा मज़हबी रहबर की ज़ालिमाना रविश और साजिश के सबब, इन यूथी-मूमेनीन पर जबरदस्त ज़ुल्म ढाए गये थे । हथियार बन्द पुलिस ने घरों में घुस घुस कर उन्हें मारा पीटा था । घरों से घसीट कर जवानों को बाहर निकाल कर जेल में ठूंस दिया था । जहां उन्हें कई; कई दिनों तक रहना पड़ा था ।

देखिए कितना फर्क है दोनों रहबरों में, एक तो हक्को-सदाकत की खातिर खुद जेल जाता है और शहीद हो जाता है ।

पर दुसरा अपने ही मानने और चाहने वालों पर जुल्म-व सितम करता है, उन्हें जेलों में ठूंसता है, उनपर बे-बुनियाद आरोप लगाकर मुकदमे चलवाता है। जिहाद, रज़ा, मीसाक की आड़ लेकर अबदुल कबी का रोल (भूमिका) अदा करता है। अफसोस सद अफसोस !

मुग़ल शाहज़ादे का दरबार और सैयदना कुतबुद्दीन

20, दिन तक जेल में रहने के बाद 21 वें दिन सैयदना को मुग़ल शाहज़ादे औरंगज़ेब के दरबार में हाजिर होकर अपने मज़हब और मज़हबी अक़ीदे को सही तौर पर बताने का हुक्म मिला।

जिस तरह बम्बई में मौजूदा सैयदना के महल में यूथी-नुमाइन्दों को शैख यमानी ने अपने सामने बुलाकर बे-बुनियाद इल्ज़ाम लगाए और उनके खिलाफ़ एक लफ्ज़ भी सुनना गवारा न किया। यूथी-नुमाइन्दों ने शैख के एक एक इल्ज़ाम को दलीलों से गलत साबित कर दिया। अपनी बातों को सही साबित करने के लिए ठोस सबूत पेश करके उसे (शैख को) ला-जवाब कर दिया। इसके बावजूद यमानी ने, उन्हें खतावार ठहराया और एक माफीनामा सामने रखकर दस्तखत करने का हुक्म दिया। तब (मरहूम) शैख गुलाम अली उर्फ कालूभाई ने शेर की तरह धाड़ कर कहा, "शैख साहब ! सूरज मशरिक के बजाए मग़रिब से निकल सकता है लेकिन मेरे नाम के दो हर्फ (अक्षर) "का"-और "लू" कलम से नहीं निकलेंगे"।

अहमदाबाद के शाही दरबार में भी ऐसा ही हुआ। सैयदना कुतबुद्दीन को मुजरिम के कठरे में खड़ा कर दिया गया अब्दुल कबी शैख यमानी की तरह आपसे सवाल पर सवाल पूछता गया। आप शेर की तरह जवाब देते गये, जब अब्दुल कबी ने कहा कि "तुम राफजी हो कि नहीं ?" आप जोश में आ गए और बोले मैं पांचों वक्त की नमाज़ पढ़ता हूं, रमज़ान के 30 रोजे रखता हूं, ज़कात देता हूं, हज्ज करने मक्का शरीफ जाता हूं, कुरआन पाक को खुदा का कलाम मानता हूं, फिर मैं "राफजी" भला कैसे हो सकता हूं ? सही मानों में मुसलमान मैं हूं। सही मानों में सुन्नी मैं हूं। हकीकी सुन्नत की राह पर चलने वाला मैं हूं।[1]

यह सुनकर अब्दुल कबी चीख कर बोला, बड़े होकर झूठ बोलते हो। सब लोग गवाह हैं कि तुम राफजी हो तुम्हारा खून हलाल है।

इस पर आप पे जलाल तारी हो गया। आपने जलाली शान से एक फसीह तकरीर की।

"मौत हर शख्स पर तारी रहेगी। मुमिनीन इससे कभी नहीं डरते। मैं सरासर बे-गुनाह हूं। और बे-गुनाह की मौत किसी तरह जायज़ नहीं है। मैं मुमिन हूं और मुमिन का खून बहाना हरगिज़ वाजिब नहीं है।

आप इसी तरह, कुछ इस अन्दाज़ से बोलते गये कि सारे दरबार पर सन्नाटा छा गया। लगता था किसी ने जादू कर दिया है, खुद शहज़ादा औरंगजेब दम ब-खुद देखता रह गया। तकरीर खत्म होने पर उसने कहा, अभी इन्हें ले जाओ।

1. शै. सादिकअली ने यह मजमून इस तरह नज्म किया है।

शेरे खुदा ना शेर वो गुर्राया आकदर,
ना राफजी हमें ना हमारा छे जद पिदर।
सुन्नी हमें छे, ऐन छे सुन्नत नी राह पर,
जे हमने कहे छे गैर, ते छे गैर बे उज़र।
चाहो करो इनायत या चाहो करो कतल,
हाकिम तमे छो, तमने सज़ावार छे अमल।

जब अब्दुल कवी की चाल नाकाम हो गयी तो वह रात भर नहीं सो सका और सै. कुतबुद्दीन को कत्ल करने का कोई और मनसूबा सोचता रहा । आखिर सुबह उसने एक बयान (Statement) तैयार करके अपने हम ख्याल ओलोमा के उसपर दस्तखत लेकर काज़िए-शहर की अदालत मे पेश किया । काज़ी ने उसे ना मन्जूर कर दिया । इस तरह यह चाल भी बेकार गयी ।

उस हीले-बाज़ ने तब एक और खतरनाक चाल चली । सैयदना के दो लड़कों के पास जाकर उसने यह समझाया कि "तुम मेरे साथ काज़ी साहब के पास चलो और मैं जो बात तुमसे कहूं तुम हां यह सही है कह दो तो सैयदना को छोड़ देंगे । अन-समझ बच्चे उसके बहकाने में आ गए और काज़ी की अदालत में हर बात पर "हां यह सही है"[1] कहते गये । फलतः काज़ी ने मजबूर होकर इलज़ाम-पत्र (Statement) पर अपने तसदीकी दस्तखत कर दिये । अब्दुल कवी ने यों सैयदना के कत्ल नामे पर मनजूरी की मोहर लगाने में कामियाबी हासिल करली, अदालत बर्खास्त हो गयी, मूमिनीन ब-हाले-जार अपने घर चले गये । सै. कुतबुद्दीन को कैदखाने भेज दिया । किसी शायर ने सच ही कहा है कि—

बिगड़ जाए जिस वक्त हाकिम की नीयत,
नहीं काम आती, दलील और हुज्जत ।

(1) उन बच्चों से कहा गया था कि सैयदना सा. सुन्नत पर नहीं चलते हैं, उनका अकीदा अहबे-सुन्नत से अलग है । वगैराह ।

मज़लूम सैयदना मौत की छाओं में

वह रात जुमादिल-आखिर की 27 वीं रात थी । ज़ालिम दुशमनों के घरों में खुशी के शादियाने बज रहे थे ।[1] मूमिनीन (बोहरों) के घरों में शबे-आशूर का माहोल (शोकाकुल-वातावरण) बना हुआ था । मूमिनीन आहो-ज़ारी और हम्दे-बारी में मसरुफ थे । पाक पर-वरदिगार के हुज़ूर में दुआ के लिए हज़ारों हाथ उठे हुए थे ।

उधर कैद खाने में सैयदना कुतबुद्दीन ने सैयदना शुजाउद्दीन को अपना जां-नशीन और 33 वां दाई घोषित किया । उन्होंने फर्माया "अब मेरी शहादत (कत्ल) में कोई देरी नहीं है ।" उस वक्त कैद खाने में शैख नजमखान और शैख मोहम्मद भी मौजूद थे । इन दोनों गवाहों की मोजूदगी में आपने सैयदना शुजाउद्दीन पर नस्स फर्माई थी अर्थात (33 वां दाई घोषित किया था ।)

रात खत्म हुई, सवेरा हुआ । अब्दुल कवी ने शाहबेग को सैयदना के कत्ल करने का हुक्म दिया । वह यह हुक्म सुनकर सकते में रह गया, मजबूर होकर कैदखाने में जाकर बोला, "या शैख शहादत नसीब हो" । सैयदना ने मकतल की जानिब रवाना होते वक्त शैख मोहम्मद और शैख नजमखान बिन चान्दजी के सामने दुबारा सैयदना शुजाउद्दीन के मनसूस होने का एलान किया ।

1. मौजूदा ज़माने में कोठार इसी तरह ज़रा-ज़रा सी बातपर फतहे-मुबीन मनाता है । शबाबी बोहरों से जबरन रोशनी करवाता है । मिठाईयां तकसीम करवाता है । एकबार जयप्रकाश बाबू ने उनके पक्ष में एक बयान दे दिया । बस इसी बात पर सारे हिन्दुस्तान में खुशी का जश्न मनाया ।

मकतल पर पहुँच कर आपने दो रकात नमाज़ पढ़ी और बुलन्द आवाज़ से शहादत का कलमा बोले । फिर सजदे में जाकर मशहूर दुआ: "वज्जहतो वजहिया" पढ़ी । इस दुआ में इसी बात का इक़रार किया गया है कि अल्लाह एक है । उसका कोई शरीक नहीं है । ज़मीन-व-आसमान का बनाने वाला अल्लाह ही है । उसी के सामने मैं ध्यान लगाए हुए हूं । मेरी नमाज़ मेरी कुर्बानी और मौत उसी अल्लाह के लिए है । मैं एक मुसलमान हूं । मुश्रिक नहीं हूं । इधर आपने दुआ खत्म की उधर ज़ल्लाद ने आपका सर मुबारक जिस्म से जुदा करदिया ।

(इन्ना लिल्ला हे व इन्ना इलय हे राजिऊन)

"शहीदों के मज़ारों पर लगेंगे हर बरस मेले ।
यकीनन वो अमर होंगे, जो हक़ पर सर कटा देंगे" ।

ता. 27, माह जुमादिल आखिर सन 1056 हिजरी की सुबाह दुनिया का सूरज तो रोशन हुआ पर फातिमी-दावत का 32 वां सूरज गुरूब हो गया । अगर मोहर्रम करबला के मासूम व मज़लूम शहीदों का मातम करने का महीना है तो जुमादिल आखिर अहमदाबाद के इस मज़लूम शहीद और उनके साथी शहीदों का मातम करने का महीना है ।

आपका आखिरी कलाम

"तुम मेरे जिस्म को क़त्ल कर सकते हो मेरी रूह (नफ्स) को नहीं" । सुकरात, ईसा मसीह, इमाम हुसैन और ऐसे ही हज़ारों, लाखों हक़ परस्तों ने अपने खूनी दरिन्दों से यही बात कही थी ।

आख़िरी रुसूम

दिन भर लाश रेत पर पड़ी रही ।[1] क़त्ल की रात को सरकारी कारिन्दों ने आपकी लाश मुबारक को खानपुरा के बाहर नदी के किनारे पर दफन कर दिया । कब्र पर पहरा बिठा दिया गया ताकि कोई लाश वहां से निकाल कर न लेजा सके । कोई आपकी ज्यारत (दर्शन) न कर सके ।

इस घटना के तीसरे दिन मोहम्मदजी बिन अमीनजी को सपने में सैयदना साहब ने फर्माया "फौरन मददगार लेकर जाओ और मेरी लाश निकालकर सरसपुर (बीबीपुर) के क़ब्रिस्तान में लेजा कर दफ़न करदो ।

नींद से जागने पर उसने ऐसा ही किया । कहते हैं जब वह और उसके साथी आपकी कब्र पर पहुँचे तो वहां दो सब्ज़ पोश (हरे रंग के कपड़े पहने हुए) अरब मौजूद थे । उन्हें देख कर वो लोग घबराए पर उन्होंने यह कहकर तसल्ली दी कि हम तुम्हारे ही साथी हैं । इन सब ने मिलकर कब्र से लाश निकाली और सरसपुर की तरफ ले चले । रास्ते में दो अरब सवार और मिले । उन्होंने भी इनकी मदद की । उस वक्त शहर के सब दरवाजे बन्द थे । इस लिए शहर के बाहर "नाले" से होकर सरसपुर पहुंचे और लाश वहां दफ़न करदी ।

यह घटना 2 रजब सन 1056 हिजरी की है । यानि आजसे 343 साल पहले की । हज़ारों, हज़ार सलाम सैयदना कुतबुद्दीन शहीद पर । कयामत के दिन तक उनपर खुदा की रहमतें नाज़िल हों ।

(1) मौजूदा सैयदना की ज्यादती के कारण आज से 6 साल पहले उदयपुर में (मरहूम) भाई अकबरअली पच्चीसावाले की लाश 24 घन्टे बे गोरो-कफ़न पड़ी रही । अफ़सोस !

जुल्मों और ज्यादतियों का नया दौर

सैयदना को शहीद करने से भी ज़ालिम अब्दुल क़वी को चैन न आया। उसने तीन दिन तक मूमिनीन (बोहरों) को क़त्ल करने का शैतानी चक्कर चलाया। डर के मारे मूमिनीन घरों को बन्द करके तहखाने में छुप गए।

शाही दरबार से यह हुक्म हुवा कि सैयदना कुतबुद्दीन के मानने वालों को शहर से बाहर निकाल दिया जाए। हां जो लोग अपने मौजूदा मजहब को छोड़दें और रईस क़ासिम के पास जाकर तोबा करलें, उन्हें छोड़ दिया जाए।[1] सुलेमानी और अलवी बोहरे काफ़ी बड़ी तादाद में कासिम के पास जाकर माफी मांग आए और तोबा करली। डर के मारे कुछ मूमिनीन (दाऊदी बोहरे) ने भी इसी तरह जान बचाई।[2] तोबा के लिए यह शर्त लगाई गई कि डाढ़ी मुन्डवानी पड़ेगी। हुक्का और नास को इस्तेमाल करनी होगी। औरतों को हाथी दांत की चूड़ियां पहननी होगी और हन्फी इमाम के पीछे नमाज़ पढ़नी होगी।[3]

1. इक़दुल-जवाहीर फ़ी अहवालुल-बवाहिर पृ. 196-197
2. आजकल भी कुछ डरपोक बोहरे मौजूदा ज़ालिम मज़हबी हाकिम से माफी मांग चुके हैं।
   मौजूदा कोठारी हुकूमत सुधारवादी मूमिनीन पर जो जुल्म ढा रही है। उसके लिए "नाथवानी-जांच कमीशन की रिपोर्ट" पढ़िये।
3. मौजूदा ढोंगी सैयदना ने मिस्र में बोहरों को सुन्नी इमामों के पीछे नमाज़ पढ़ने को मजबूर किया। खुद ने भी पढ़ी।

इन दिनों में हक्क परस्त मूमिनीन को एक एक पल किस तरह गुज़ारा होगा, यह अपने आप में बड़ी दर्दनाक कहानी है।[1] उस वक्त उनका खुदा के सिवा कोई चारो-मददगार नहीं था। वो दिन रात खुदा की इबादत करते और उसी की ज़ात से मदद पाने के लिए दुआ करते रहे। आखिर कार मुग़ल बादशाह शाहजहां तक इस प्रकार किये जा रहे जुल्म-व-ज्यादतियों की खबर पहुँची। उसने अहमदाबाद से औरंगजेब को बुलवा लिया और शायस्ताखान को गवर्नर बना दिया। उसने मूमिनीन की शिकायतों को सुना और दुश्मनों के खिलाफ सख्त कार्यवाही कर जुल्म से निजात दिलाई। सारे शहर में उसने यह एलान करा दिया कि कोई भी व्यक्ति बोहरा क़ौम को किसी तरह न सताए।

सै. शुजाऊद्दीन पर मुसीबतें

जाते वक्त औरंगजेब सैयदना शुजाउद्दीन को साथ ले गया। पहले वह लोग दिल्ली गए। मालूम हुवा कि शाहजहां लाहोर में है तो वे वहां गये। लाहोर में सैयदना शुजाउद्दीन को एक अस्तबल में ठहराया। वहां एक दिन अचानक आग लग गई।

1. उदयपुर में तो खुद मौजूदा सैयदना ने इसी तरह अपना तागूती चक्कर चला रखा है। 'बरात' के शैतानी चक्कर के हज़ारों यूथी-मूमिनीन का जीना हराम कर रखा है। वापस मीसाक़ लेने, माफी मांगने, और तोबा करने, गुलामी को और पक्का करने, अपने खून के रिश्तों को भी तोड़ देने और नफरत व दुश्मनी के दलदल में फंसने के लिए लोगों को मजबूर कर रखा है। फलतः स्वार्थी, कमज़ोर और डरपोक लोगों ने यूथ का साथ छोड़कर सैयदना के शैतानी जाल में जाना मनज़ूर कर लिया।

सभी झोंपड़ियां जल गयीं पर वह झोंपड़ी नहीं जली जिसमें आपको रखा गया था। जब औरंगजेब को यह बात मालूम हुई तो उसने आपके पास जाकर अपने बेजा सलूक की माफी मांगी और तोहफे व खलअत देकर ईज्ज़त के साथ आपको वहां से रुख़सत किया। आपको जाने के लिए एक घोड़ा भी दिया। आप सीरोंज, दोहद, उज्जैन, रामपुरा, उदयपुर होते हुए सन 1058 हिजरी के माह रमज़ान में अहमदाबाद लौट आए। लेकिन आपकी क़िसमत में जाम-ए-शहादत नोश करना लिखा था। अतः हासिदों और दुश्मनों ने आपको फिर गिरफ्तार करवा दिया और 9, शव्वाल सन 1065 हिजरी को आप ज़हर से शहीद कर दिए गए। खुदा की रेहमत और सलाम आपके उपर।

बीबी अजब बू

शाहजहां की जिस तरह आखिरी दिनों में उसकी बेटी जहांआरा ने दिन रात ख़िदमत की, यहां तक कि जेल में भी उसके साथ रही। इसी तरह उसी के राज्य अहमदाबाद में सैयदना कुतबुद्दीन शहीद की बेटी अजब-बू आपके पास थी। आपकी ख़िदमत करती थी। आपकी शहादत के बाद अजब-बू की लाहोर के क़िले के अफसर सैयद हामिदअली खान से शादी हुई। इन्होंने इनायतअली खान नामी बेटे को जन्म दिया। सैयद हामिद ने एक बार सपने में हज़रत अली (स.अ.) का यह फर्मान पाया कि "असना-अशरी" मज़हब छोड़कर हमारे दाई फीरखान शुजाउद्दीन के हाथ पर बैअत कर लो। उस वक्त के दाई सैयदना फीरखान शुजाउद्दीन को भी सपने में हज़रत अली ने फरमाया कि वह सैयद हामिद अली की बैअत ले लें। चुनांचे जब सैयद हामिद अली आपके पास आए तो आपने उनकी बैअत लेली। सैयद हामिद अली इमाम जाफ़रुस्सादिक की नस्ल से थे।[1]

1. आसारे-मालवा मुंशी अहमद मुर्तुज़ा नज़ीर, वकील सीरोंज

आखिरी बात

हमारे नबी, रसूले-करीम (स.अ.) ने फर्माया है। "जब मेरी उम्मत इतनी नाकारा और बुज़दिल हो जाएगी कि अपने ज़ालिम को "ज़ालिम" कहने से डरने लगेगी तब अल्लाह-तआला उससे बेज़ार हो जाएगा। उससे बराअत करलेगा।"

आपने यह भी फर्माया कि "इस उम्मत पर खुदा की ताईद (मदद) उस वक्त तक रहेगी जब तक नेक लोग बुरे लोगों की ताज़ीम (सम्मान) नहीं करेंगे। और जब वो बुरे लोगों को अपना पेशवा समझकर ताज़ीम करने लगेंगे तो खुदा उनको फक्र, फाक़ा और ज़िल्लत में मिला देगा।"

मौलाना जाफिरुस्सादिक़ (अ.स.) फर्माते हैं "इनसाफ करने वाले इमाम की दुआ और मज़लूम की दुआ कभी बेकार नहीं जाती।" सबसे बड़ी मुसीबत यह है कि एक ज़ालिम हाकिम जो अल्लाह के हुक्म की ना फर्मानी करता हो, तू उसकी फरमान बरदारी करे।[1]

अल्लाह-तआला हमें तोफ़ीक़ अता करे कि हम उपर लिखी हिदायतों पर ज्यादा से ज्यादा अमल करें। आमीन !

1. मौजूदा सैयदना साहब के वालिद (साबिक सैयदना साहब) ने अदालत में यह दावा किया था कि मैं ज़मीन का खुदा हूँ। मौजूदा सैयदना साहब भी खुद को यही समझते हैं। यह सरासर ना फरमानी है या नहीं खुद मूमिनीन (बोहरे) हज़रात सोचें।

"तन्ज़ीमे इशाअत इस्लामी तअलीम" की शाअे करदा किताबो की फहरिस्त

1. माहे रमज़ान की फज़ीलतें और रोज़े की फज़ीलत (हिन्दी)
2. अमर कहानी मौलाना कुतबुद्दीन शहीद कुदसुद (हिन्दी)
3. हिन्दी सहीफा मय 14 सुरते तर्जुमा के साथ
4. मय्यत के अहकाम (हिन्दी व उर्दू)
5. निकाह तलाक के अहकाम (हिन्दी व उर्दू)
6. इमाम इस्माईल (अ.स.) (हिन्दी व उर्दू)
7. कुरआन मजीद की इस्लामी तफसीर (4 जिल्द में बोहरा गुजराती में)
8. अहसनुल कसस– आदम (अ.स.) से इमाम तक अम्बिया औलिया की तारीख
9. यासीन – इन्नल्लाह (अरबी – हिन्दी)
10. सनसनी खेज़ हकाइक (उर्दू)
11. इल्म ना मोती जरो नसीहत की तशरीह
12. हैरतअंगेज़ इन्किशाफत
13. खनाइलुल रातिईन
14. रहनुमाए हज व जियारत
15. मजमउल बहरेन (जिल्द अव्वल) शहादुन नबवी व नेहजुल बलागा का तर्जुमा
16. मजमउल बहरेन (जिल्द सानी) नेहजुल बलागा व खुतुबतेन फातिमिया का तर्जुमा व 100 फज़ीलते
17. नकाब कुशाइ (असगर अली इंजिनियर पर तन्कीदी जायज़ा)
18. चाँद और रोज़ा, चाँद और खलाबाज़ और चंद मुफ़ीद मज़ामीन
19. मौला अली की 100 फज़ीलतें (हिन्दी व उर्दू)
20. किताबतुत तौरात (अरबी के साथ उर्दु तर्जुमा)
21. दाअइमुल इस्लाम (जिल्द अव्वल) बोहरा गुजराती
22. दाअइमुल इस्लाम (जिल्द सानी) बोहरा गुजराती
23. इस्राईली इबरतनाक हदीसे (उर्दु तर्जुमा)
24. हयाते तय्यबा (शेख अहमद अली राज की सवानेह उम्री)
25. इस्बातुत तावील व हकीकत
26. मुताअतुन निस्सा (मुताअ कुरआन और हदीस की रोशनी में नाजायज़ खालिस ज़िना)
27. फातिमी खुतबात मय कुतबी व बदरी शहादत नामा
28. पंजतियात (दीवाने अहमद अली राज – अरबी)
29. 15 मुनाजात (इमाम ज़ैनुल आबिदीन की मुनाजातो का तर्जुमा)
30. निकाह तलाक मय विरासत के अहकाम
31. तीन लुकमान (मय ज़मीमा फखरी, खनवी व दाऊदी)
32. वज़कुर फिल किताबे इस्माईल (उर्दु)
33. कुरआन मजीद की इस्माईली तफसीर (तिलावत व तर्जुमा शेख अहमद अली राज सा. की आवाज़ में कैसेट सेट 141)
34. यमानी मनसक, यमन में यमानी दुआत के मज़ारात
35. ज़रा सोचिए
36. यूसूफ सिद्दीक
37. इमाम हसन (अ.स.)
38. इमाम हुसैन (अ.स.)
39. मोहम्मद (स.अ.व.), तैय्यब (अ.स.)
40. वफात की इददत व सोग वारी
41. छियालीस 46 दुआते हक मय फज़लाअ किराम (बोहरा गुजराती)

42. दआईमुल इस्लाम का मुख्तसर खुलासा
43. Y.N. और 4 उस्ताद मज़लुम
44. नस्त–रज़ा, मीसाक और बराअत
45. गुलदस्ता–ए–मालूमात
46. अलवी और हुसैनी मुनाजात
47. जैनब नामा
48. किस्सा तमीम अन्सारी
49. नहजतुल मनाकिब
50. इन्सान और हैवानात का मुकदमा (इख्वानुस सफा का एक रिसाला)
51. कुब्राने नैमत
52. तौहफतुल मुरसलीन
53. अहयाउल लैल
54. नस्त रज़ा और बराअत
55. रहनुमाए हज (दूसरा हिस्सा)
56. तन्बीहुल गाफिलीन (तर्जुमा)
57. तौहफतुल इख्वान (पहला हिस्सा, दूसरा हिस्सा– इख्वानुस्सफा के 52 रिसालों का मुख्तसर इकतिबास)
58. तौहफतुल इख्वान (तीसरा हिस्सा– किताब तौहफतुल कुलूब अल मौजज़ा, अल काफिया और ताजुल अंकाइद (तीन किताबों) के इकतिबासात का मजमुआ)
59. तन्बीयुल हादी वलमुस्ताहदी
60. मजालिसे हातिमिया
61. नजनी मनाहिस
62. अल्लाह वालों का बचपन और बच्चों की तालीम व तरबियत
63. अब्बास अलमदार,
64. सिम्तुल - हक़ायक़ (हकीकतो की माना)
65. बसाइर बद्री शहादत नामा
66. शा'लां बद्री मर्सियो का मजमूआ
67. रैहाने - इब्रत (सदकल्लाह का माना)
68. लुकमान (जीव) (लुकमानी नसीहतों का मजमूआ)
69. चाँद और ख़लाबाज़ (अमेरिकी सुबूत के साथ)
70. इस्माईली तफसीर की 141 केसेट की सी.डी. (7 प्लेट)
71. इमाम इस्माईल (अ.स.) हिन्दी में
72. हज के मनासिक की हक़ीकत
73. कीका भाई जल्दी पढ़ो नसीहत की तशरीह
74. वफात की इद्दत के मुता'ल्लिक असगर अली इंजीनियर का गलत फतवा

बेहम्दिल्लाह आज तक इतनी किताबे छप चुकी है ।

इस किताब का खर्च मेरे शागिर्दे-रशीद मुबारक हुसैन वल्द इकबाल हुसैन जावरियां वाला की तरफ से किया गया है।

अल्लाह सुब्हानहू उनको जज़ा-ए खैर अता करे । आमीन

अहमद अली राज